

सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति

प्रलिस के लिये:

[कॉलेजियम प्रणाली, भारत का मुख्य न्यायाधीश](#)

मेन्स के लिये:

कॉलेजियम प्रणाली का विकास और इसकी आलोचना, सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [भारत के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़](#) द्वारा [भारत के सर्वोच्च न्यायालय](#) में दो नए न्यायाधीशों- [न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मशिरा](#) और [न्यायमूर्ति के.वी. विश्वनाथन](#) की नियुक्ति की गई है।

- इनके शामिल होने के साथ ही सर्वोच्च न्यायालय में **34 न्यायाधीशों की निर्धारित स्वीकृत संख्या** पूर्ण हो गई है।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया:

- सर्वोच्च न्यायालय की संरचना और शक्ति:**
 - मूल रूप से **सर्वोच्च न्यायालय में आठ न्यायाधीश** थे (एक मुख्य न्यायाधीश और सात अन्य)।
 - संसद ने समय के साथ न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि की है।
 - सर्वोच्च न्यायालय में वर्तमान में **34 न्यायाधीश (एक मुख्य न्यायाधीश और 33 अन्य)** है।
- न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिये योग्यताएं:**
 - संवधान के अनुच्छेद 124 (3) के अनुसार**, एक व्यक्ति को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया जा सकता है:
 - व्यक्ति को **भारत का नागरिक** होना चाहिये।
 - एक **उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कम-से-कम पाँच साल या लगातार दो ऐसी न्यायालयों में सेवा** की हो।
 - वैकल्पिक रूप से कम-से-कम **दस वर्षों के लिये एक उच्च न्यायालय का अधिवक्ता** या कुल मिलाकर दो या दो से अधिक विभिन्न न्यायालयों में अधिवक्ता रहा हो।
 - राष्ट्रपति की राय में एक प्रतिष्ठित न्यायविद** होना चाहिये।
- नियुक्ति:**
 - सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति **राष्ट्रपति द्वारा संवधान के अनुच्छेद 124 के खंड (2) के अंतर्गत की जाती है।**
 - राष्ट्रपति सूचित नियुक्तियों करने के लिये सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के साथ परामर्श करता है।
- शपथ:**
 - प्रत्येक नियुक्त न्यायाधीश को राष्ट्रपति या इस कार्य के लिये नियुक्त व्यक्ति के समक्ष शपथ लेनी होती है और उस पर हस्ताक्षर करने होते हैं।
 - शपथ में **भारत के संवधान, संप्रभुता और अखंडता को बनाए रखने तथा भय या पक्षपात के बिना कर्तव्यों का पालन करने की प्रतिबद्धता शामिल है।**
- कार्यकाल और निकासन:**
 - संवधान में न्यायाधीश की नियुक्ति के लिये कोई निर्धारित न्यूनतम समय-सीमा तय नहीं है।
 - सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश **65 वर्ष की आयु तक** पद पर बना रहता है।
 - हालाँकि एक न्यायाधीश राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा देकर 65 वर्ष की आयु से पूर्व भी इस्तीफा दे सकता है।
- वेतन एवं भत्ते:**
 - सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन, भत्ते एवं विशेषाधिकार, अवकाश और पेंशन **संसद** द्वारा निर्धारित किये जाते हैं।
 - सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन, पेंशन और भत्ते **भारत की संचित नधि पर भारति होते हैं।**
- सेवानिवृत्ति के बाद प्रतिबंध:**
 - सेवानिवृत्ति के बाद सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश को **भारत में किसी भी अदालत में कानून का अभ्यास करने या किसी भी**

सरकारी प्राधिकरण के समक्ष वकालत करने से प्रतिबंधित किया जाता है।

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 128 के अनुसार, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के किसी भी सेवानिवृत्त न्यायाधीश को भारत के राष्ट्रपति की पूर्व- अनुमति से ही भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में बैठने और कार्य करने के लिये वापस बुलाया जा सकता है।

■ नषिकासन:

- सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को राष्ट्रपति के आदेश से ही पद से हटाया जा सकता है। जसि पद से हटाने की प्रक्रिया के लिये संसद के प्रत्येक सदन द्वारा संबोधित करने की आवश्यकता होती है जसि वशिष बहुमत द्वारा समर्थित किया जाता है, यानी उस सदन की कुल सदस्यता का बहुमत तथा उपस्थिति और मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तहाई बहुमत द्वारा किया जा सकता है।
- नषिकासन के आधार में दुरव्यवहार या अक्षमता भी सम्मलित होते हैं।
- संसद के पास अभिषण प्रस्तुत करने और किसी न्यायाधीश के दुरव्यवहार या अक्षमता की जाँच करने तथा उसे सिद्ध करने की प्रक्रिया को वनियमिति करने का अधिकार है।
- एक बार नयुक्त होने के बाद न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु तक सेवा करते हैं तथा उनके कार्यकाल की अवधि में सिद्ध कदाचार या अक्षमता को छोड़कर उन्हें हटाया नहीं जा सकता है।

■ न्यायिक नयुक्तियों के लिये कॉलेजियम प्रणाली:

- उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नयुक्ति कॉलेजियम प्रणाली के माध्यम से की जाती है।
- कॉलेजियम, जसिमें भारत के मुख्य न्यायाधीश और सर्वोच्च न्यायालय के चार वरषिष्ठतम न्यायाधीश शामिल हैं, न्यायाधीशों की नयुक्ति, पदोन्नति एवं स्थानांतरण पर नरिणय लेते हैं।
- भारतीय संविधान में "कॉलेजियम" शब्द का उल्लेख नहीं है, लेकिन न्यायिक घोषणाओं के माध्यम से स्थापित किया गया है।

कॉलेजियम प्रणाली का विकास:

■ प्रथम न्यायाधीश मामला (1981):

- इसने यह नरिधारित किया कि न्यायिक नयुक्तियों और तबादलों पर [भारत के मुख्य न्यायाधीश \(CJI\)](#) के सुझाव की "प्रधानता" को "टोस कारणों" के चलते अस्वीकार किया जा सकता है।
- इस नरिणय ने अगले 12 वर्षों के लिये न्यायिक नयुक्तियों में न्यायापालिका पर कार्यपालिका की प्रधानता स्थापित कर दी है।

■ दूसरा न्यायाधीश मामला (1993):

- सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट करते हुए कॉलेजियम प्रणाली की शुरुआत की कि "परामर्श" का अर्थ वास्तव में "सहमति" है।
- इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा कि यह CJI की व्यक्तिगत राय नहीं होगी, बल्कि सर्वोच्च न्यायालय के दो वरषिष्ठतम न्यायाधीशों के परामर्श से ली गई एक संस्थागत राय होगी।

■ तीसरा न्यायाधीश मामला (1998):

- राष्ट्रपति द्वारा जारी एक प्रेजिडेंशियल रेफरेंस (Presidential Reference) (अनुच्छेद 143) के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने पाँच सदस्यीय निकाय के रूप में कॉलेजियम का वसितार किया, जसिमें CJI और उनके चार वरषिष्ठतम सहयोगी शामिल होंगे।

■ चौथा न्यायाधीश मामला (2015):

- 99वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम, 2014 एवं राष्ट्रीय न्यायिक नयुक्ति आयोग अधिनियम, 2014 ने राष्ट्रीय न्यायिक नयुक्ति आयोग (National Judicial Appointments Commission- NJAC) नामक एक नए निकाय के साथ सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नयुक्ति की कॉलेजियम प्रणाली को बदल दिया है।
- हालाँकि वर्ष 2015 में सर्वोच्च न्यायालय ने 99वें संवैधानिक संशोधन के साथ-साथ NJAC अधिनियम को असंवैधानिक और चौथे न्यायाधीश के मामले में शून्य घोषित कर दिया। नतीजतन, पहले की कॉलेजियम प्रणाली फिर से सक्रिय हो गई।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रलिसि:

प्रश्न. भारतीय न्यायापालिका के संदर्भ में नमिनलखित कथनों पर वचार कीजिये:

1. भारत के सर्वोच्च न्यायालय के किसी भी सेवानिवृत्त न्यायाधीश को भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा भारत के राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से वापस बैठने और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के लिये बुलाया जा सकता है।
2. भारत में उच्च न्यायालय के पास अपने नरिणय की समीक्षा करने की शक्ति है जैसा कि सर्वोच्च न्यायालय करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

??????:

प्रश्न. भारत में उच्च न्यायपालिका के न्यायाधीशों की नियुक्ति के संदर्भ में 'राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम, 2014' पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (2017)

[स्रोत: द द्रिष्टि](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/appointment-of-judges-in-supreme-court>

